

पुरुष और मर्दानगी पर एनीमेटर्स व फैसलिटेटर्स के साथ तीन दिवसीय प्रशिक्षण

दिनांक: 23-25 मार्च 2017
सप्तऋषि सेवा भवन, रांची (झारखण्ड)

प्रशिक्षण प्रतिवेदन



आयोजक

सेन्टर फॉर हेल्थ्स एण्ड सोशल जस्टिश, नई दिल्ली

पार्टनर

सृजन फाउण्डेशन-रांची, छोटानागपुर सांस्कृतिक संघ-गुमला सहयोगिणी-बोकारो

सपोर्ट

ओक फाउण्डेशन

पहला दिन : 23 मार्च 2017

सत्र न० – 1 स्वागत, परिचय एवं उद्देश्य

तीन दिवसीय प्रशिक्षण के पहले सत्र की शुरुआत प्रतिभागियों के देरी से पहुंचने के कारण दोपहर 12 बजे से हुई। प्रशिक्षक द्वारा आये सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए परिचय कराया गया। इसके तहत प्रतिभागियों को अपना नाम, गांव का नाम तथा अपनी अभिरुचि बताने के लिए कहा गया। इस प्रशिक्षण में तीनों जिलों से एनीमेटर व फैंसलिटेटर सहित 29 प्रतिभागियों व प्रशिक्षक समूह सहित कुल 32 लोगों ने भाग लिया। (देखें परिशिष्ट नं० –1)

इसके बाद इस प्रशिक्षण में नये एनीमेटर के रूप में आये साथियों को सभी के साथ पुनः परिचय कराया गया। प्रशिक्षक द्वारा सभी प्रतिभागियों खासकर फैंसलिटेटर्स को जिम्मेदारी दी गई कि जो पहली बार एनीमेटर के रूप में इस प्रशिक्षण में शामिल हुए हैं उनके साथ अलग से मिलते रहे तथा उनके सवालों पर उनकी मदद करें तथा किसी भी दिक्कत के लिए उनसे सम्पर्क कर सकते हैं। इसके बाद प्रशिक्षक द्वारा तीन दिवसीय प्रशिक्षण के उद्देश्यों को स्पष्ट किया गया।

सत्र न० – 2 अपेक्षाएं, शंकाएँ व आधारभूत नियम

दूसरे सत्र में प्रशिक्षक द्वारा इस प्रशिक्षण से प्रतिभागियों को उनकी अपेक्षाओं और यदि कोई आशंका हो तो उसे निकलवाने का प्रयास किया गया जो निम्न प्रकार से निकलकर आये –

- ✚ मर्दानगी की परिभाषा क्या है?
- ✚ मर्दानगी की सोच/अवधारणा क्या है?
- ✚ पितृसत्ता और मर्दानगी कैसे जुड़े हैं?
- ✚ मर्दानगी के विभिन्न आयाम क्या-क्या हैं?
- ✚ मर्द, मर्दानगी और मर्दवाद क्या है?
- ✚ मर्दानगी का समाज में क्या असर होता है?
- ✚ मर्दानगी को कैसे बदल सकते हैं?

उपरोक्त अपेक्षाओं के बाद प्रशिक्षक ने कहा कि हम लोग पिछले तीन चरणों में प्रशिक्षण सफलतापूर्वक आयोजित कर चुके हैं तथा किसी प्रकार की कोई दिक्कत नहीं हुई। इसलिए सभी प्रतिभागी वयस्क हैं इसलिए पूर्व की भांति सभी लोग अपनी जिम्मेदारियों का पालन करेंगे तथा इसके लिए फैंसलिटेटर यह सुनिश्चित करेंगे कि किसी साथी की सीख प्रभावित न हो तथा नये साथियों को भी मदद मिल पाये, ऐसी अपेक्षा की जाती है।

सत्र न० – 3 तीसरे चरण के प्रशिक्षण से बनी सीख व मुद्दों का रिकैप

इस सत्र में तीसरे चरण का रिव्यू किया गया, इसके लिए प्रशिक्षक समूह द्वारा प्रतिभागियों को उनके जिलों के आधार पर तीन समूहों में बांटते हुए अलग-अलग बैठाया गया तथा क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में जेण्डर, हिंसा व समूह संचालन से जुड़े हुए विभिन्न विषयों से 25 प्रश्नों को रखा गया। प्रत्येक प्रश्न पर पहले सभी प्रतिभागियों से सहमति व असहमति के आधार पर चिन्हित किया जाता इसके बाद समूह में चर्चा कर किसी एक प्रतिभागी को उसके कारणों का उत्तर देना तय किया गया ताकि सभी प्रतिभागियों की जानकारी व समझ को बढ़ाया जा सके। इसके बाद बारी-बारी से सभी सवालों पर प्रतिभागियों की जानकारी को समझने का प्रयास किया गया। अगर किसी प्रश्न का जवाब ठीक या अधूरा होता तो प्रशिक्षकों द्वारा उसे स्पष्ट किया गया। (क्विज प्रश्नावली, देखें परिशिष्ट नं० –2)

सत्र न० – 4 प्रतिभागियों के तीसरे चरण के प्रशिक्षण नियोजन का रिव्यू

इस सत्र में पिछले प्रशिक्षण में प्रतिभागियों द्वारा तैयार किये गये नियोजन की प्रति सभी प्रतिभागियों को वापस दिया गया तथा प्रशिक्षक द्वारा नियोजन के अनुसार क्या प्रयास किया है तथा उसमें किस तरह की दिक्कतें आई हैं और उसका समाधान कैसे किया गया है, लिखने के लिए कहा गया। इसके लिए 30 मिनट का समय निर्धारित किया गया। इसके बाद प्रशिक्षक द्वारा प्रतिभागियों से इस त्रैमास में किये गये बदलाव के प्रयासों को लिखने के लिए कहा गया। तथा इसके लिए भी 30 मिनट का समय निर्धारित किया गया। सभी प्रतिभागियों से बदलाव के प्रयासों की स्टोरी को इकट्ठा करते हुए दो प्रतिभागियों को एक अपने व्यक्तिगत व दूसरी सामूहिक प्रयासों की कहानी को उपस्थित सभी साथियों से शेयर करने के लिए कहा गया ताकि सभी की सीख बन सके। स्टोरी में समस्या क्या थी, समस्या के समाधान के लिए क्या प्रयास किया गया, समस्या समाधान में किस-किस प्रकार की समस्याएं व चुनौतियां आईं तथा इनके हल के लिए क्या प्रयास किया गया आदि के आधार पर कहानी का चुनाव प्रशिक्षक द्वारा किया गया।

सत्र न० – 5 मर्दानगी की संरचना

पांचवें सत्र में चर्चा की शुरुआत करते हुए प्रशिक्षक द्वारा प्रतिभागियों से सवाल किया गया कि जब हम मर्दानगी कहते हैं तो हमारे दिमाग में क्या आता है? प्रतिभागियों से निकलने वाले जवाबों को बोर्ड में लिखा गया जो निम्न प्रकार से थे –

शराबी, जिद्दी, रौब जमाने वाला, दादागिरी, बच्चा पैदा करने में सक्षम, घमण्डी, तातकतवर, लिंग वाला, मूछ वाला, हिम्मत वाला, हट्टा-कट्टा, हार न मानने वाला, बहादुरी, मारपीट कराने वाला, गाली देने वाला, जिसे दर्द न हो, घर का मुखिया, कमाने वाला, सोच सही, घर का सहयोग करने वाला, जिम्मेदारी वाला, नेतागिरी करने वाला, सेक्स में खुश करने वाला, अहंकारी, आत्मविश्वासी, दयालु, सहनशील, समझाने वाला, मददगार आदि।

प्रतिभागियों से निकलकर आया हम सभी लोग उपरोक्त छवि में फिट नहीं होते अर्थात् सभी पुरुषों पर ये लागू नहीं होते हैं। क्योंकि ये छवियां या गुण लगातार बदलते रहते हैं और इनमें से नकारात्मक और कुछ सकारात्मक हैं। प्रशिक्षक द्वारा स्पष्ट किया गया कि मर्दानगी एक सामाजिक प्रक्रिया है जो पुरुषों को हिंसक, नियंत्रक व सत्ताधारी बनाती है तथा केवल यह शरीर से नहीं जुड़ी है। यह परिस्थिति के अनुसार बदलती रहती है तथा इसके कुछ सकारात्मक पक्ष भी हैं जहां पुरुष मर्द होने के नाते अपनी ताकत यानि सत्ता का उपयोग लोगों की मदद करने के लिए करते हैं।

इसके बाद प्रतिभागियों को चार समूह में विभाजित करते हुए प्रत्येक सदस्य को अपने समूह में अपने जीवन से जुड़ी हुई किसी एक घटना को बताने के लिए कहा गया जो उसकी मर्दानगी को बनाती थी अर्थात् मर्द होने का दबाव था। इसके बाद प्रशिक्षक द्वारा चारों समूहों से एक-एक घटना सभी को बताने के लिए कहा गया। (देखें परिशिष्ट न० –3) इसके बाद प्रतिभागियों से चर्चा करते हुए निकले बिन्दु निम्न प्रकार से थे –

स्वरूप	दबाव	
वंश बढ़ाना	बच्चा पैदा करने का दबाव	कैसा मर्द?
नियंत्रक	बेटा पैदा करने का दबाव	लोग क्या सोचेंगे?
रक्षक	रक्षा/सुरक्षा करने का दबाव	डर
सत्ताधारी	पैसा कमाने का दबाव	

पत्नी से ज्यादा पैसा कमाने का दबाव

कहानियों के प्रस्तुतीकरण के बाद प्रशिक्षक द्वारा स्पष्ट किया गया कि पुरुषों पर अपनी मर्दानगी का दबाव दिखाई दे रहा था जिसमें पुरुषों द्वारा आक्रामक व्यवहार अपनाया जाता है तथा उन्हें डर होता है कि अगर वह ऐसा व्यवहार नहीं करेंगे तो उन्हें नामर्द कहा जायेगा। समाज में ऐसे पुरुषों को स्वीकार्य नहीं किया जाता जिनका व्यवहार महिलाओं जैसा होता है उन्हें तरह तरह के ताने मारे जाते हैं तथा हिंसा भी की जाती है जिसकी वजह से पुरुष आक्रामक मर्दानगी दिखाते हैं अर्थात उन पर मर्द होने का दबाव होता है।

इसके बाद रात्रि 8 बजे पहले दिन के प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन किया गया तथा तय किया गया कि दूसरे दिन सभी प्रतिभागी प्रातः 9 बजे हाल में पहुंच जायेंगे।

दूसरा दिन : 24 मार्च 2017

रिकैप (पुनरावलोकन) –

दूसरे दिन प्रशिक्षण की शुरुआत प्रातः 9 बजे से एक गीत के माध्यम से की गई। इसके बाद प्रशिक्षक द्वारा पहले दिन की हुई चर्चाओं पर यदि कोई प्रश्न या कन्फ्यूजन हो, उसके बताने के लिए कहा गया ताकि उस पर स्पष्टता लाई जा सके। इसके बाद एक एनरजाइजर के बाद अगले सत्र की शुरुआत की गई।

सत्र न0 – 6 पितृसत्तात्मक मर्दानगी को बनाएं रखने की बाध्यता

पितृसत्तात्मक मर्दानगी को बनाये रखने की बाध्यता पर समझ बनाने के लिए प्रशिक्षक द्वारा प्रतिभागियों से सामूहिक चर्चा की गई। उन्होंने प्रतिभागियों से पूछा कि पुरुषों की वह कौन-कौन सी भूमिकाएं हैं जो वर्तमान पितृसत्तात्मक मर्दानगी को बनाये रखने में मदद करती हैं? तथा इनका असर पुरुषों पर क्या पड़ता है? प्रतिभागियों से निकलने वाले जवाब निम्न प्रकार से रहे –

पुरुषों की भूमिकाएं	पुरुषों पर पड़ने वाला असर
<ul style="list-style-type: none">▪ कहीं भी बाहर आने जाने की स्वतंत्रता▪ निर्णय लेने की छूट▪ क्या करना है और क्या नहीं करना इस पर किसी का हस्तक्षेप नहीं▪ कमाने/पारिवारिक दायित्व को निभाने का दबाव▪ दूसरों से परिवार के सदस्यों की रक्षा करना▪ अपनी श्रेष्ठता को बनाये रखना▪ बच्चों खासकर बेटा पैदा करना▪ अपनी इच्छाएं प्रकट कर सकता है	<ul style="list-style-type: none">▪ कई तरह के मौके, जान-पहचान बनना▪ कुछ भी कर सकते हैं▪ सभी लोग बात मानते हैं▪ कष्ट होता है तथा कभी-कभी जोखिम भी उठाना पड़ता है जिससे परेशानी होती है▪ तनाव व चिन्ता बनी रहती है▪ ताने मिलते हैं तथा काम करने में मन नहीं लगता▪ पत्नी के साथ रिश्ते में खटास आती है

प्रशिक्षक द्वारा स्पष्ट किया गया कि पुरुषों पर हमेशा तय भूमिकाओं को पूरा करने का दबाव होता है जिसके लिए वह धौसपूर्ण व्यवहार करता है जिसका नकारात्मक असर उसके तथा परिवार के अन्य सदस्यों पर भी पड़ता है। पितृसत्ता में पुरुषों को हमेशा अपनी सुविधाओं को छिन जाने का डर होता है जिससे वह कई बार जोखिम उठाते हैं। पुरुषों पर हमेशा अपनी मर्दानगी को साबित करते रहने का

दबाव रहता है ताकि उसके साथ किसी तरह का सवाल खड़ा न हो जिसका उसे नुकसान उठाना पड़ता है।

सत्र न0 – 7 मर्दानगी की संरचना को प्रभावित करने वाले कारक

प्रतिभागियों को खेल के माध्यम से चार समूहों में विभाजित करते हुए अलग-अलग चार बिन्दुओं पर उन घटकों को निकालने के लिए कहा गया जो मर्दानगी की छवि को बनाये रखती हैं या उसको प्रभावित करती हैं। समूह चर्चा तथा प्रस्तुतीकरण के बाद निम्न बिन्दु निकलकर आये –



समूह नं0-1 धार्मिक संस्थाओं में मर्दानगी का स्वरूप

- धार्मिक संस्थाओं में उच्च वर्ग के द्वारा कथित निम्न वर्ग के साथ भेदभाव
- मंदिरों-मस्जिदों व अन्य धार्मिक स्थानों में पुरुषों का एकाधिकार
- धार्मिक आयोजनों जैसे यज्ञ, भंडारा, कथा-प्रवचन, जलसा में विधि व्यवस्था से लेकर संचालन में पुरुष वर्चस्व
- धार्मिक ग्रन्थों जैसे रामायण में सीता की अग्निपरीक्षा एवं रामराज्य के बाद गर्भवती सीता का वनवास
- धार्मिक संस्थानों में महिलाओं के प्रवेश पर रोक
- श्मसान घाट, कब्रिस्तान व ऐसे स्थानों पर

समूह नं0- 2 स्कूल/कालेजों/विश्वविद्यालयों में मर्दानगी का स्वरूप

- लड़के अपनी मर्दानगी लड़कियों के साथ छेड़खानी द्वारा साबित करते हैं
- लड़को द्वारा गुटबाजी करना
- छात्र संघ चुनाव में भी मर्दानगी का प्रदर्शन
- बैठने का निर्णय लड़के लेते हैं
- लड़को द्वारा धूमपान, गुटखा का सेवन
- लड़को द्वारा बेंच या दीवार पर अश्लील चुटके
- मोबाईल द्वारा अश्लील मैसेज व फोटो भेजकर
- अधिकांश लड़के खुले में टायलेट करके मर्दानगी दर्शाते हैं
- जेन्ट्स टीचर द्वारा महिला शिक्षक पर दबाव बनाकर

<p>जाने एवं अंतिम संस्कार में भाग लेने पर महिलाओं को वंचित करना</p> <ul style="list-style-type: none"> ▪ सभी धर्मों के प्रमुख में पंडित, मौलवी, पादरी के रूप में पुरुष वर्चस्व ▪ अलग-अलग धार्मिक वेषभूषा ▪ धर्म, अंधविश्वास के नाम पर महिलाओं के साथ हिंसा, शोषण व ठगी 	<ul style="list-style-type: none"> ▪ जेन्ट्स टीचर कभी-कभी स्कूल की लड़कियों पर अनायास दबाव ▪ किन्ही का स्वागत करने के लिए लड़कियों पर दबाव बनाते हैं ▪ लड़के लड़ाई झगड़े करके ▪ लड़के अपने पहनावें और कलाईयों में हथेलियों में आदि जगहों पर टेढ़ू, धागा, ब्रेसलेट, अंगूठी द्वारा मर्दानगी का प्रदर्शन ▪ लड़को द्वारा लड़कियों को जबरदस्ती दोस्त बनाने का दबाव
<p>समूह नं०-3 समुदाय स्तर पर मर्दानगी का स्वरूप</p> <ul style="list-style-type: none"> ▪ लड़कियों के पहनावें पर लोगों द्वारा तरह-तरह की बातें एवं नियंत्रण ▪ ग्राम सभा में पुरुषों का वर्चस्व ▪ सामुदायिक कार्यक्रमों में दूसरे समुदाय से प्रतिस्पर्धा ▪ जाति आधारित भेदभाव व हिंसा ▪ हिंसा के बदले हिंसा ▪ दबंग लोगों के द्वारा निम्न स्तर के लोगों पर दबाव ▪ समुदाय स्तर की घटना को समुदाय से बाहर जाने से रोकना 	<p>समूह नं० -4 परिवार में मर्दानगी का स्वरूप</p> <ul style="list-style-type: none"> ▪ बच्चा पैदा करने का दबाव- शादी के एक साल के बाद ▪ पैसा कमाने का दबाव ▪ वंश को आगे बढ़ाने का दबाव, बेटा ही चाहिये ▪ पत्नी से ज्यादा पैसा कमाने का दबाव ▪ शराब के नशे में पत्नी के साथ गाली गलौज एवं मारपीट ▪ घर के मुखिया द्वारा नियंत्रण बनाये रखने का दबाव ▪ छोटे बच्चों पर डर बनाये रखना ▪ पितृसत्ता को बनाये रखने का दबाव ▪ पत्नियों के निर्णय में पति का दबाव ▪ लड़कियों को जल्दी शादी कर अपने जिम्मेवारी से मुक्त होना ▪ परिवार में अपना धौस बनाये रखना

उपरोक्त निकले बिन्दुओं के आधार पर प्रशिक्षक द्वारा स्पष्ट किया गया कि वर्तमान आक्रामक मर्दानगी को बनाने तथा उसको बढ़ाने में परिवार, समाज, शैक्षणिक संस्थानों व धर्म का बहुत बड़ा योगदान है। ये संस्थाएं धौसपूर्ण/आक्रामक मर्दानगी के व्यवहार को पुरुषों के दिल और दिमाग में कब्जा करने की कोशिश करती हैं तथा पीढ़ी दर पीढ़ी बनाये रखती हैं जो हमें सच लगते हैं। जिसके तहत पुरुषों को बहुत सारे फायदे भी मिलते हैं तथा जो भी पुरुष इनमें फिट नहीं बैठता उसको अच्छा नहीं माना जाता, उसके साथ हिंसा होती है जिससे हमेशा उनके मन में भय बना रहता है। इसी प्रकार की भूमिका अन्य संस्थान जैसे मीडिया व राजनीतिक संस्थाएं आदि भी निभाती हैं। अतः हमें लगातार इनको समझने तथा इन्हें बदलने की जरूरत है क्योंकि इनसे पुरुषों को नुकसान ही है।

सत्र न० - 8 आक्रामक मर्दानगी का हिंसा से सम्बंध

आक्रामक मर्दानगी और हिंसा को समझने के लिए सबसे पहले 'पिता-पुत्र व धर्म युद्ध' फिल्म दिखाई गई। इसके बाद प्रतिभागियों से चर्चा किया गया जिसमें प्रतिभागियों ने हिंसा को पहचानने का प्रयास किया कि कहां-कहां पर हिंसा हो रही थी तथा हिंसा को बढ़ाने के लिए क्या तर्क दिये जा रहे थे जैसे- हमने चूड़िया नहीं पहन रखी है, हिन्दू राष्ट्र बनके रहेगा, सती होना भगवान का रूप होता है और उसमें ईश्वर की शक्ति होती है आदि। इसके बाद कुछ प्रतिभागियों द्वारा अपने अनुभवों को भी सभी के साथ साझा किया गया।

प्रतिभागियों के अनुभवों को जोड़ते हुए प्रशिक्षक द्वारा स्पष्ट किया गया कि मर्दानगी का सीधा सम्बंध हिंसा से है। अक्सर हम अपनी मर्दानगी का इस्तेमाल हिंसक तरीके से करते हैं तथा उसे सही ठहराने का प्रयास करते हैं। हर स्तर पर हर रिश्ते, समाज, जाति, धर्म तथा वर्ग में किन्ही न किन्ही आधारों पर पुरुष द्वारा अपनी धोस जमाने व ताकत का दिखाने के लिए हिंसा का सहारा लिया जाता है। कभी-कभी राज्य व राष्ट्र भी अपनी ताकत का इस्तेमाल इस तरह से करते हैं। विभिन्न समाजों में या समुदायों में इनका स्वरूप अलग-अलग हो सकता है। इनमें सबसे ज्यादा महिलाएं और बच्चें प्रभावित होते हैं तथा उनको शिकार बनाया जाता है। अतः हमें इन व्यवहारों व मान्यताओं को बदलने की जरूरत है।

सत्र न० - 9 अपनी मर्दानगी को साबित करने के लिए हिंसा करना

सत्र की शुरुआत करते हुए प्रशिक्षक द्वारा सबसे पहले एक डाक्यूमेन्ट्री फिल्म व सम्बंधित चित्रों को दिखाया गया। जिसमें दिखाया गया कि पुरुष अपनी मर्दानगी को दिखाने के लिए किस तरह से जोखिमपूर्ण व्यवहार करते हैं।



इसके बाद प्रशिक्षक द्वारा प्रतिभागियों को कहा गया कि वे अपने व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन में उन घटनाओं को याद करें जब उन्होंने अपनी मर्दानगी को साबित करने के लिए जोखिमपूर्ण व्यवहार को अपनाया। उस व्यवहार के पीछे मान्यता क्या थी? तथा किस रिश्ते में यह व्यवहार अपनाया तथा उसका असर क्या हुआ। इस काम के लिए सभी प्रतिभागियों को 15 मिनट का समय निर्धारित किया गया। इसके बाद सभी प्रतिभागियों को अपने अनुभवों को रखने के लिए प्रेरित किया गया जो निम्न प्रकार से रहे -

जोखिमपूर्ण व्यवहार	जुड़ी मान्यताएं	किस-किस रिश्ते में	हिंसात्मक मर्दानगी का पुरुषों पर असर
त्योहार की ऑड में दारू और मौज मस्ती के लिए बकरी (लड़की) की मांग	मर्द उसे कहते हैं जो मौज मस्ती करे	दोस्त	तू-तू मैं-मैं हुआ यानि मानसिक तनाव
तुम ठीक से कपड़ा पहनो और अच्छे रहो	लड़को को स्मार्ट दिखना चाहिये	दोस्त	मैं रात भर सो नहीं पाया, पैसा भी नहीं था व दूसरे दिन उधार लेकर कपड़े खरीदने पड़े
शादी के दो माह बाद अलग कर दिया गया क्योंकि दुकान ठीक से नहीं चलता था	पैसा कमाना है	भैया-भाभी	कमाने का दबाव
मेरी चाची से गाली-गलौज होते रहना	चाची है उम्र ज्यादा है, दिमाग नहीं है	चाची	मन उदास रहता है
लड़का तेज बाईक चलाता है	बच्चा है उसका उम्र कम है	पुत्र	पढ़ाई में मन नहीं लगाता
घर में औरत से बातचीत ठीक से नहीं कर पाना	औरत है क्या? चूड़िया पहन रखी है क्या?	भाई	तनाव व डर
पढ़ाई को लेकर दबाव व पिटाई	लड़का है तो बेहतर रिजल्ट लाना है और सफल होकर नौकरी करना है	भतीजा	तनाव व दबाव
पढ़ाते समय थप्पड मारना	पढ़ाई पर ध्यान देना	भतीजा-भतीजी	मारने के बाद आत्मग्लानि
धार्मिक स्थल पर शक्ति प्रदर्शन, उचक-उचक के नारे लगाना	एकता प्रदर्शित करना	सामूहिक	कभी कभी नुकसान
काम के लिए बाहर जाना	घर चलाने व कमाने का दबाव ये पुरुषों का काम है	परिवार	परेशानी व पैसे की बर्बादी, दुर्घटना से बचा जोखिमपूर्ण काम करने की विवशता
न चाहते हुए भी शादी का दबाव	शादी के बाद बहू लाना ताकि घर का कामकाज हो सके	परिवार के सदस्य	आर्थिक तंगी झेलना, पत्नी-बच्चों व घरवालों की इच्छाएं पूरा न कर पाना
घर से अलग कर देना	बीवी का गुलाम हो गया है, उसकी मदद करने लगा और सारा पैसा उसी को दे देता है	माँ और बेटा	पैसा कमाने का दबाव, घर का सामान जोड़ने का दबाव, लोगों के तानों का डर
अपने छोटे भाई के साथ समय	पढ़ाई में ध्यान देने के	भाई	भाईके साथ मारपीट व

समय पर झगड़ा करते रहना	लिए कहना		बाद में आत्मग्लानि
नीतू-नीतू कहकर पुकारना	भाभी के साथ सबकुछ चलता है	भाभी	चिड़चिड़ापन
अपने से बड़ो के साथ झगड़ा	दूसरी जाति (लोहरा) के लोग पूजा नहीं कर सकते	गांव के लोग व पड़ोसी	झगड़ा आगे बढ़ने की चिन्ता
मैं पत्नी से बोला ससुराल नहीं जाना है	ससुराल में इज्जत कम होने लगता है	पति-पत्नी	इज्जत कम होने व मान-सम्मान कम होने का डर
पत्नी को बोलना कि ब्यूटी पार्लर का काम गांव के बाहर जाकर सीखो	गांव के लोग मजाक व तरह-तरह की बात करतें	पति-पत्नी	मान सम्मान कम कि पत्नी घर से बाहर जाती है
शादी में बहन को कंधो से घर से बाहर निकालना	भाई ही घर से बहन को विदा करे	बहन	भाई ताकतवर है
विज्ञान विषय लेकर पढ़ना	अपने को तेज साबित करना	पिता	फेल, मासूसी, तनाव
स्नातक में नाईट में पार्ट टाईम जाब करना व लड़की पटाने के लिए मौलवी के पास जाना	प्रेमिका को अपने वश में करना	प्रेमिका	लड़की के इन्कार करने से तनाव में सिगरेट पीना व शराब का सेवन

प्रशिक्षक द्वारा निकली उपरोक्त बातों के आधार पर स्पष्ट किया गया कि पुरुष विभिन्न सामाजिक मान्यताओं के कारण अपनी मर्दानगी को साबित करने के लिए प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से हिंसात्मक मर्दानगी का व्यवहार अपनाते हैं जो सही नहीं है। कभी-कभी हिंसात्मक मर्दानगी के इस दबाव का नुकसान उन्हें खुद तथा परिवार के दूसरे सदस्यों को भी उठाना पड़ता है। जब पुरुषों को अपनी मर्दानगी को लेकर कोई चुनौती मिलती है तो वे और भी ज्यादा उग्र हो जाते हैं अतः हमें इस तरह की मान्यताओं और व्यवहार को बदलने की जरूरत है।

सत्र न0 – 10 मर्दानगी को पुर्नगठित करना : जेण्डर भूमिकाएं

सकारात्मक मर्दानगी के लिए जेण्डर आधारित भूमिकाओं में बदलाव को समझने के लिए प्रतिभागियों को तीन समूहों में विभाजित किया गया। तीनों समूहों को घर के कामों, शारीरिक हावभाव तथा बोलचाल की भाषा में क्या बदलाव किया जा सकता है, इस पर रोल प्ले प्रस्तुत करने के लिए कहा गया। इसके लिए 20 मिनट का समय निर्धारित किया गया। तीनों समूहों की प्रस्तुतीकरण से निकले



महत्वपूर्ण बिन्दु निम्न प्रकार रहे –

रिश्ता	घर के काम	शरीर के हावभाव	बोलचाल की आवाज
<ul style="list-style-type: none"> ▪ बहु ▪ पति ▪ लड़की ▪ पत्नी ▪ माँ-बाप 	<ul style="list-style-type: none"> ▪ घर की सफाई ▪ बर्तन साफ करना ▪ पानी भरना ▪ भाई बहन मिलकर काम करना ▪ हाथ बढ़ाना ▪ काम में सभी को शामिल करना ▪ दूसरे के काम को महत्व देना 	<ul style="list-style-type: none"> ▪ चिड़चिड़ा न हो ▪ आराम से मदद करना ▪ सहयोग करना ▪ परेशानी को समझना ▪ गुस्सा न दिखाना 	<ul style="list-style-type: none"> ▪ बेटी को बात रखना ▪ आत्मविश्वास बढ़ाना ▪ गाली का प्रयोग न करना ▪ डांटना नहीं ▪ धीरे व विनम्रता से बात करना ▪ चिड़चिड़ा पन न हो ▪ अच्छे काम की तारीफ करना ▪ प्यार से बात करना

प्रशिक्षक द्वारा स्पष्ट किया गया कि घरेलू कामों, शारीरिक हावभाव व बोलचाल की भाषा में पुरुषों व लड़कों को बदलाव लाना होगा ताकि धौंसपूर्ण मर्दानगी की छवि को बदला जा सके। हमारी भाषा तथा हावभाव ऐसा होना चाहिये जो दूसरे के लिए सम्मानजनक हो, किसी को नीचा न दिखाता हो तथा सहयोगात्मक हो। पुरुषों व लड़कों को इनका अभ्यास घरेलू कार्यों को करते हुए करना चाहिये तभी समाज में बराबरी आ सकती है।

तीसरा दिन : 25 मार्च 2017

रिकैप (पुनरावलोकन) –

तीसरे दिन प्रशिक्षण की शुरुआत प्रातः 9 बजे से एक सामूहिक गीत के माध्यम से की गई। इसके बाद प्रशिक्षक द्वारा दूसरे दिन की हुई चर्चाओं पर बनी सीख बताने के लिए कहा गया, इसके लिए सभी प्रतिभागियों को बारी-बारी से बताने के लिए कहा गया। अंत में यदि किसी प्रतिभागी का कोई प्रश्न या कन्फ्यूजन हो, उसके बताने के लिए कहा गया ताकि उस पर स्पष्टता लाई जा सके।

सत्र न0 – 11 मर्दानगी को पुर्नगठित करना : रिश्ते

धौंसपूर्ण मर्दानगी के दबाव को कम करने तथा रिश्तों को मजबूत बनाने के लिए क्या प्रयास किया जाना चाहिये तथा इसका पारिवारिक रिश्तों व पुरुषों पर क्या असर पड़ेगा? इसके लिए प्रतिभागियों को तीन समूहों में बांट कर समूह चर्चा कराई गई। प्रतिभागियों के चार्ट प्रस्तुतीकरण से निम्न बातें निकलकर आई –

किया जाने वाला प्रयास	रिश्ता	परिवार में असर	पुरुषों पर असर
<ul style="list-style-type: none"> ▪ घर के कामों में भागीदारी करना ▪ सभी के साथ मिलकर निर्णय लेना व व्यवहार 	<ul style="list-style-type: none"> ▪ पति-पत्नी ▪ भाई-बहन ▪ माता-पिता ▪ पिता-पुत्र 	<ul style="list-style-type: none"> ▪ किसी के साथ कोई भी हिंसा नहीं होगी ▪ आपसी तालमेल बढ़ता ▪ परस्पर प्रेमभाव बढ़ता 	<ul style="list-style-type: none"> ▪ आत्मबल/मनोबल ▪ मानसिक तनाव नहीं ▪ सहनशीलता बढ़ेगी ▪ काम का बोझ नहीं होता

<ul style="list-style-type: none"> करना ■ किसी भी तरह का भेदभाव व हिंसा न करना ■ अपनी समस्याओं को पत्नी के साथ बताना व राय लेना ■ बच्चों के साथ घुलमिलकर रहना व उनकी भी राय जानना ■ जबरदस्ती यौनिक रिश्तें न रखना ■ महिला मित्रों के साथ आदर व सम्मान दिखाना 	<ul style="list-style-type: none"> ■ भाई-भाई ■ दोस्त 	<p>है</p> <ul style="list-style-type: none"> ■ एक दूसरे का मानसिक सहयोग बढ़ेगा ■ जिम्मेदारी का बंटवारा होगा जिससे काम आसान हो जायेगा ■ परिवार के सदस्यों का आत्मबल बढ़ता है ■ दबाव कम हो जायेगा तथा सभी को आराम मिलेगा 	<ul style="list-style-type: none"> ■ जोखिम/रिस्क कम होगा क्योंकि वे उसे कह पायेंगे ■ डर कम हो जाता है ■ सामाजिक ताने नहीं मिलेंगे जिससे मानसिक तनाव नहीं रहेगा ■ पुरुष नशा नहीं करेंगे/कम करेंगे
--	--	--	--

निकली बातों के आधार पर प्रशिक्षक द्वारा स्पष्ट किया गया कि यदि हमें अपने रिश्तो को मजबूत बनाना है तो अपनी आक्रामक मर्दानगी की छवि को बदलना होगा और सकारात्मक मर्दानगी हेतु छोट-छोटे प्रयास करना होगा। हमें अपने साथी तथा बच्चों पर विश्वास करना होगा तथा सम्मान करना होगा। परिवार में बातचीत को बढ़ाना होगा तथा अपनी सुविधाओं को छोड़ते हुए घरेलू जिम्मेदारियों में हाथ बंटाना तथा महिलाओं को भी नये अवसर उपलब्ध कराना होगा।

सत्र न0-12 मर्दानगी को पुर्नगठित करने में आने वाली बाधाओं की पहचान व कम करने कीरणनीतियां सकारात्मक मर्दानगी के अभ्यास में स्वयं, परिवार तथा समाज के स्तर पर आने वाली चुनौतियों तथा इनकी पहचान कर इन चुनौतियों को कैसे कम कर सकते हैं? इस पर समझ बनाने के लिए प्रतिभागियों के साथ सामूहिक चर्चा की गई। प्रतिभागियों के साथ सामूहिक चर्चा से निकले महत्वपूर्ण बिन्दु निम्न प्रकार से रहे –

सकारात्मक मर्दानगी के अभ्यास में आने वाली चुनौतियां	सकारात्मक मर्दानगी के अभ्यास में आने वाली चुनौतियों को कैसे कम कर सकते हैं
<ul style="list-style-type: none"> ■ गांव में लोगों का विरोध- मनपसंद शादी में ■ ना मर्द होने का ताना – बकरी सामान खा गई ■ सामाजिक परम्परा के विरोधी (धर्म, संस्कृति) – (पंडित, मौलवी, पादरी, कथा-प्रवचन करने वाले, पहान, राजनीतिज्ञ, पुलिस, प्रधान, मुखिया आदि द्वारा) ■ लोगों खासकर बुजुर्गों का विरोध व समझाने में दिक्कत ■ घर में माता-पिता को समझाने में दिक्कत ■ घरेलू बातों को लेकर समाज में मजाक ■ तरह-तरह की गलत चर्चा ■ औरतों के अपनी परम्परागत भूमिकाओं के तोड़ने पर विरोध ■ सामाजिक कार्यकर्ताओं का विरोध/हमला 	<ul style="list-style-type: none"> ■ साथियों की काउन्सलिंग करना ■ उदाहरणों के माध्यम से बात को खुद समझाना और दूसरों को समझाना ■ समूह के सदस्यों को पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराना ■ जानकारी देकर समूह को मजबूत बनाना व नियमित मासिक बैठक करना

- समाज/घर से अलग कर देना/निकाल देना
- घृणा/बदनामी का डर

प्रशिक्षक द्वारा स्पष्ट किया गया कि जब कोई भी व्यक्ति वर्तमान परम्परा व भूमिका से हटकर कोई भी काम करता है तो स्वयं, परिवार व समाज के स्तर पर अनेक प्रकार की चुनौतियां व समस्यायें आती हैं। यह कोई नई बात नहीं है फिर भी हम लोगों ने अपनी सुविधा के आधार पर बहुत सारे बदलाव किया है। हमें समानता आधारित समाज के लिए इन दबावों को कम करना तथा मर्दानगी की सकारात्मक छवि के लिए भी प्रयास करना होगा। इन प्रयासों में हमें व्यक्तिगत व सामूहिक स्तर पर अपने समूह सदस्यों के साथ मिलकर प्रयास करना होगा। पुरुष होने के नाते ये हमारी जिम्मेदारी है कि इसकी शुरुआत हम करें तथा स्वयं से करें तभी सकारात्मक बदलाव संभव है।

सत्र न0- 13 बदलाव का नियोजन

अंतिम सत्र में प्रतिभागियों द्वारा स्वं बदलाव का नियोजन किया गया। इसके लिए प्रशिक्षक द्वारा एक तैयार किया हुआ फार्मेट सभी प्रतिभागियों को उपलब्ध कराया गया जिसमें उन्हें किये जाने वाले बदलावों को लिखने के लिए कहा गया (देखें परिशिष्ट नं0 -3)। इसके लिए 30 मिनट का समय निर्धारित किया गया। बदलाव का नियोजन फार्मेट निम्न प्रकार से रहा -

प्रतिभागी का नाम: गांव का नाम व जिला

उठाया जाने वाला कदम	घरेलू कार्य	शारीरिक हावभाव/भाषा	महिलाओं व बच्चों की देखभाल	गर्भनिरोधक के इस्तेमाल व बच्चों के जन्म में गैप

प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम सत्र में नियोजन के बाद प्रशिक्षक द्वारा प्रतिभागियों से उनकी अपेक्षाओं को पुनः अवलोकन करने के लिए कहा गया तथा कहा गया कि यदि उनके मन में अभी ऐसा कोई सवाल हो जो वो जानना चाहते हैं तो प्रश्न कर सकते हैं। अपेक्षाओं के पुनरावलोकन के बाद, तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद देते हुए किया गया।

परिशिष्ट नं० -1 प्रतिभागियों की सूची :-

क्र०	प्रतिभागी का नाम	संस्था	जिला
1	जगन्नाथ नायक	सहयोगिणी	कसमार, बोकारो
2	प्रवीण कुमार	सहयोगिणी	कसमार, बोकारो
3	कमलेश जायसवाल	सहयोगिणी	कसमार, बोकारो
4	बलदेव रजवार	सहयोगिणी	कसमार, बोकारो
5	शेखर शरदेन्दु	सहयोगिणी	कसमार, बोकारो
6	हीरा लाल मोदी	सहयोगिणी	कसमार, बोकारो
7	मन्तोष कुमार महतो	सहयोगिणी	कसमार, बोकारो
8	रउफ आलम	सहयोगिणी	कसमार, बोकारो
9	लवकुश रजवार	सहयोगिणी	कसमार, बोकारो
10	देवेन्द्र नाथ	सहयोगिणी	कसमार, बोकारो
11	कालिन्द्र सिंह	सृजन फाउण्डेशन	बेड़ो, रांची
12	अमित कुमार	सृजन फाउण्डेशन	बेड़ो, रांची
13	अमित कुमार सिंह	सृजन फाउण्डेशन	बेड़ो, रांची
14	रवि उरॉव	सृजन फाउण्डेशन	बेड़ो, रांची
15	पंकज कुमार	सृजन फाउण्डेशन	बेड़ो, रांची
16	रमई धान	सृजन फाउण्डेशन	बेड़ो, रांची
17	अरुन धान	सृजन फाउण्डेशन	बेड़ो, रांची
18	सोमरा उरॉव	सृजन फाउण्डेशन	बेड़ो, रांची
19	ओमप्रकाश साहू	सृजन फाउण्डेशन	बेड़ो, रांची
20	मन्नू उरॉव	सी०एस०एस०	सिसई, गुमला
21	रविन्द्र उरॉव	सी०एस०एस०	सिसई, गुमला
22	आदिल	सी०एस०एस०	सिसई, गुमला
23	धीरज कुमार	सी०एस०एस०	सिसई, गुमला
24	दिलीप महली उरॉव	सी०एस०एस०	सिसई, गुमला
25	जगरनाथ उरॉव	सी०एस०एस०	सिसई, गुमला
26	महिमा टोपो	सी०एस०एस०	सिसई, गुमला
27	गजेन्द्र उरांव	सी०एस०एस०	सिसई, गुमला
28	सुरजीत सिंह महापात्रा	परिचिति	कोलकता
29	सुमित महाता	परिचिति	कोलकता
30	संजय कुमार सिंह	ब्रेक थू	रांची
31	जगदीश लाल	सी०एच०एस०जे०	नई दिल्ली
32	महेन्द्र कुमार	सी०एच०एस०जे०	रांची

परिशिष्ट नं० -2 विवज प्रश्नावली

सहायक निर्देश -

1. सर्वप्रथम सभी प्रतिभागियों से सवाल पर उनकी सहमत, असहमत या नही जानने वाले सदस्यों की संख्या हाथ उठवांकर पता कर ले तथा टेबिल में उस संख्या को डाल दें।

2. इसके बाद बारी-बारी से हर टीम को सवाल का जवाब देने तथा जवाब स्पष्ट करने के लिए समय निर्धारित कर दें।
3. सवाल का सही जवाब न आने पर प्रशिक्षक/फैसलिटेटर उसको स्पष्ट करें।

क्र०	सवाल	सहमत टीम 1	असहमत टीम 2	पता नहीं टीम 3
1	अगर बच्चें बीमार हैं तो घर पर रहना व उनकी देखभाल करना माँ की ही जिम्मेदारी है।			
2	अगर बच्चें गलती करते हैं तो उनकी पिटाई करना गलत नहीं है।			
3	पुरुष ही सही निर्णय ले सकते हैं।			
4	लड़कियों का अकेले घर से निकलना ठीक नहीं है इसलिए उन्हें घर में ही रहना चाहिये।			
5	माँ के कामों में हाथ बंटाना लड़कियों की जिम्मेदारी है इसमें लड़कों की कोई भूमिका नहीं होती।			
6	कहीं भी जाने के पहले पत्नी को पति से अनुमति ले लेना चाहिये।			
7	लड़कियों को जीन्स नहीं पहनना चाहिये क्योंकि ये लड़कों की ड्रेस है			
8	परिवार को पूरा करने के लिए एक बेटा होना जरूरी है और इसके लिए महिला ही जिम्मेदार होती है।			
9	बच्चें कुछ गलत करते हैं तो इसके लिए माँ ही जिम्मेदार होती है।			
10	माहवारी के बारे में पुरुषों को जानने की जरूरत नहीं है यह महिलाओं का अपना मुद्दा है।			
11	बच्चों की शादी का निर्णय केवल माता-पिता को ही करना चाहिये।			
12	लड़कियों की शादी जल्दी कर देना चाहिये अन्यथा वे भाग जायेंगी।			
13	लड़कियों का किसी दूसरे लड़के के साथ दोस्ती करना ठीक नहीं।			
14	पत्नी अगर कुछ गलत करें तो पति उसकी पिटाई कर सकता है।			
15	नशे की हालत में यदि कोई पुरुष अपनी पत्नी की पिटाई या गाली गलौज करता है तो पत्नी को बर्दाश्त कर लेना चाहिये।			
16	कुछ महिलाएं डायन होती हैं इसलिए समाज द्वारा उन्हें सजा दिया जाना चाहिये।			
17	परिवार को एकजुट रखने के लिए महिलाओं को मारपीट/हिंसा बर्दाश्त करना चाहिये।			
18	पत्नी की इच्छा न होने के बावजूद यदि पति उसके साथ शारीरिक सम्बंध बनाता है तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है।			
19	अगर बहन के साथ किसी तरह की छेड़खानी होती है तो इसे सार्वजनिक नहीं करना चाहिये क्योंकि इससे बदनामी होती है।			
20	पति-पत्नी के बीच झगड़ा ये उनका घरेलू मामला है इसमें किसी दूसरे को			

	हस्तक्षेप करने की जरूरत नहीं है।			
21	अगर कोई सदस्य बार-बार बुलाने के बावजूद समूह की बैठक में नहीं आता है तो उसे समूह से निकाल दिया जाना चाहिये।			
22	समूह बैठक में सभी निर्णय लीडर द्वारा ही लिया जाना चाहिये।			
23	गांव में अगर किसी लड़की के साथ छेड़खानी होती है तो इस पर समूह को शांत रहना चाहिये अन्यथा उसके परिवार की बदनामी होगी।			
24	समूह बैठक की सूचना सदस्यों को जिस दिन बैठक हो उसी दिन दिया जाना चाहिये।			
25	छेड़खानी के लिए लड़कियां भी जिम्मेदार होती हैं इसलिए समूह के सदस्यों को बीच में नहीं पड़ना चाहिये।			

परिशिष्ट नं० -3 मर्द होने के नाते पड़ने वाला दबाव की कहानियां

(1) मेरी शादी 10 मई 2010 को हुई थी। शादी के एक वर्ष बीत जाने के बावजूद जब बच्चा नहीं हुआ तो मुझे मेरे दोस्तों द्वारा ताना स्वरूप कहने लगे कि यार मिठाई कब खिलाओगे, हम लोग चाचा कब बनेंगे। इसी तरह मेरी पत्नी को भी औरते जो नजदीकी रिश्ते की थी ताने मारने लगी। मेरी पत्नी रात में सोने आती थी तो वह मासूम होकर कहती थी मैं माँ कब बनूंगी, लोग बच्चा चाहते हैं। तब मैंने दवा करवाया और इस तरह ढाई वर्ष बाद साल के अंतिम दिन 31 दिसम्बर 2012 को बेटा हुआ। इसके बाद लोगों ने ताने मारना बंद कर दिया।

कमलेश जायसवाल, बोकारो

(2) मैंने 2014 में दसवीं पास करने के बाद पढ़ाई बंद कर दी क्योंकि मेरे घर की आर्थिक स्थिति काफी खराब थी। पैसे की कमी के कारण मैंने मुम्बई में एक मार्बल का काम करने लगा और वहां करीब 6 माह फरसी का काम किया। उसके बाद मेरे भाई (मो० जानी बाबू अंसारी) ने मुझे फोन कर कोलकता बुला लिया और बोले कि तुम अपनी पढ़ाई जारी रखो। कोलकता में 2 सप्ताह रहने के बाद फिर एडमिशन लिया और इस वर्ष 2017 में इंटर का एक्जाम दिया है।

रउफ आलम, बोकारो

(3) मैं एक बार दोस्तों के साथ घूमने वैष्णो देवी मंदिर ट्रेन से जा रहा था। ट्रेन में सफर के दौरान हम सभी दोस्त एक साथ बैठे थे और मेरी सीट पर दो लड़किया आकर बैठ गईं। कुछ समय बाद कुछ लड़के आते हैं और वहीं पर खड़े होकर गन्दें-गन्दें कमेंट कर रहे थे। ये सब देखकर मैं कुछ नहीं बोला और मेरे दोस्तों ने भी कुछ नहीं बोला। कुछ देर बाद मुझे रहा नहीं गया और लड़कियों के पास जाकर बोला तुम आगे थोड़ा खिसक जाओ, मैं भी बैठ जाता हूँ और उन्होंने ऐसा ही किया। और मैं इशारा करके लड़कियों से बात करने लगा कि ये सब साथ में हैं। वे लड़के एक-एक करके वहां से हटते गये। उस समय मुझे मर्दानगी का दबाव इसलिए था क्योंकि दो लड़कियों को अकेले समझकर लड़के कमेंट कर रहे थे और मैं उन लड़कियों को बिना वजह बात किये और उन लोगों की मदद की। इस काम से मुझे मर्दानगी होने का एहसास हुआ और गर्व महसूस किया।

अमित, लमकाना, रांची

(4) 2010 में मैं रांची में हास्टल में रहकर पढ़ाई कर रहा था। मई 2015 में मेरे पिता-माँ ने शादी तय कर दिया तब मेरा ग्रेजुएशन पूरा हो गया था। उस समय मैं पिता जी (उत्पत्त हुसैन) के साथ

फिजीशियन का काम करता था। मुझे एक दोस्त से पता चला कि बी0एड0 में एडमीशन हो रहा है। मेरे पास जितना पैसा था और बाकी पापा से पैसे लेकर एडमीशन ले लिया। मेरी माँ नहीं चाहती थी कि मैं बी0एड0 में एडमीशन लूँ। कुछ दिन ठीक था मार्च 2016 में मेरे माता और पिता दोनों बोलने लगे कि बेटा तुम और आगे पढ़ो, गांव में पढ़ने के लिए माहौल नहीं है पत्नी के साथ सिसई में रहो वहां ट्यूशन/स्कूल जो करना हो धीरे-धीरे पैसा कमाना और वहीं रहना और पढ़ना। मैं पिता जी कहने पर सिसई चला आया। जब मैं सिसई आया तो मेरे पास लगभग 500 रू0 था और वह इसलिए भेजे थे कि वो बी0एड0 में पैसा नहीं देना चाहते थे। जब मैं सिसई में रहने लगा तो बहुत दिक्कत होने लगी हम दोनो ने पाया कि हम दोनों को पैसा कमाना चाहिये। उस समय मेरे पास काम नहीं था और मेरी पत्नी एक स्कूल में और मैं ट्यूशन पढ़ाकर पैसा कमाने में 2-3 महीने गुजर गया। उसी समय घर में पैसा को लेकर लड़ाई हुई। पत्नी बोली तुम तो कुछ नहीं कमाते हो मेरे से कम कमाते हो यह कहकर ताना देती। मेरे ऊपर दबाव था कि मेरी पत्नी ज्यादा कमाती है और मैं कम कमाता हूँ। उसी समय मेरे दिमाग में आया कि आज वो 2-3 महीने मेरे से ज्यादा पैसा कमाती है और कहती है कि मैं ज्यादा कमाती, इसका अहंकार हो रहा है। दबाव के कारण मैंने बहुत ज्यादा कड़ी मेहनत करके लगभग 10-15 हजार ज्यादा कमाने लगा और 6-8 महीने में उसे स्कूल छोड़वाकर मैंने घर में ही पार्लर का काम शुरू करवा दिया। आज पैसे के चलते लड़ाई भी नहीं होता, सब ठीक है।

आदिल, सिसई

परिशिष्ट नं0 -4 बदलाव का नियोजन

एनीमेटर/ फैसलिटेटर	उठाया जाने वाला कदम	घरेलू कार्य	शारीरिक हावभाव/भाषा	महिलाओं व बच्चों की देखभाल	गर्भनिरोधक के इस्तेमाल व बच्चों के जन्म में गैप
दिलीप महली	स्वयं के स्तर पर	घरेलू कार्य में किसी की सलाह नहीं लेता था तथा महिला कार्य करती थी अब शामिल हूंगा।	मेरे द्वारा परिवार में धौंसपूर्ण व्यवहार था तथा भाषा में सकारात्मक सोच लाउंगा।	महिलाओं व बच्चों के प्रति हर तरह की समस्या को समझने का प्रयास करूंगा।	परिवार नियंत्रण सम्बंधी पत्नी के साथ चर्चा करेंगे और बीच बचाव करेंगे।
धीरज कुमार	स्वयं के स्तर पर	घर में पत्नी के काम में हाथ बंटाते हैं। पानी लाते, झाडू देते और अब हमेशा इसी तरह करते रहेंगे।	घर में अब पत्नी के साथ बहुत ही अच्छी तरह से बर्ताव करते हैं तथा मृदु भाषा का इस्तेमाल करते हैं।	बच्चों की देखभाल व परवरिश में कोई कसर नहीं छोडूंगा।	अभी कण्डोम का इस्तेमाल करते हैं। 5 साल की बच्ची है तथा पत्नी की पढ़ाई पूरी होने के बाद बच्चों के बारे में सोचेंगे क्योंकि अभी जरूरत महसूस नहीं करते।
	परिवार के स्तर पर	परिवार में सभी की जरूरतों को पूरा करेंगे।	परिवार में भाषा में नम्रता का परिचय देनें।		
आदिल	स्वयं के स्तर पर	घर में सभी लोगों को बतायेंगे।	शारीरिक हावभाव कड़क नहीं रहना पड़ेगा।	घर के सारे लोगों से की मशविरा से घुलमिल कर रहना	बच्चे के जन्म में 5 साल का गैप तथा कण्डोम का इस्तेमाल करना
	परिवार के स्तर पर		पत्नी, माँ-बाप के साथ नार्मल हांवभाव से बात		गांव में लोगों को छोटे परिवार के फायदे और

			करेंगे।		कण्डोम यूज करने के लिए कहना
जगरनाथ	स्वयं के स्तर पर		घर में किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं होगा।		गर्भ निरोधको का इस्तेमाल करना जरूरी है।
रविन्द्र उरांव	स्वयं के स्तर पर	पत्नी के सलाह से कार्य करेंगे।	अपने धौसपूर्ण व्यवहार में बदलाव लाउंगा	महिला और बच्चों की समस्याओं को समझने का प्रयास करेंगे।	पत्नी के साथ चर्चा करेंगे।
मन्नू उरांव	स्वयं के स्तर पर	अपने कमरे की सफाई खुद करेंगे	गाली नहीं देंगे व प्यार से बात करेंगे। अपने भाई से इस पर चर्चा करेंगे	बच्चों की पढ़ाई में मदद करेंगे।	
महिमा टोप्पो	स्वयं के स्तर पर	अपने काम स्वयं के स्तर पर करना	ऊंची आवाज में बात न करना बड़ी बड़ी आंखों से न देखना	देखभाल करेंगे व बीमारी में पत्नी की सेवा करेंगे	कण्डोम का इस्तेमाल
	परिवार/ समाज के स्तर पर	किसी भी काम को किसी पर न थोपना व निर्णय लेने की छूट देना महिला समूह के बैठक में बिना अनुमति जाने देना	परिवार में सभी की राय सुनना	पत्नी के साथ ज्यादा समय देना व बच्चों की देखरेख व पढ़ाई पर ध्यान देना, खेलना-खिलाना	दोस्तों के साथ कण्डोम इस्तेमाल पर चर्चा करना
गजेन्द्र उरांव	स्वयं के स्तर पर	परिवार में लड़का होने का घमण्ड था अब मैं घमण्डी नहीं बनूंगा।	शरीर के हावभाव बदलेंगे, माता-पिता के साथ मर्दानगी नहीं दिखाऊंगा।	दूसरे पुरुषों को देखभाल करने का सुझाव देंगे।	अपने दोस्तों व नजदीक के लोगों को कम से कम तीन साल का गैप बनाने के लिए कहेंगे। समाज के अन्य लोगों को भी जानकारी देंगे।
अमित कुमार लमकाना	स्वयं के स्तर पर	घर के कामों में अब तक मुझे जो अच्छा लगता था अब घर पर चर्चा के बाद निर्णय लेंगे।	पहले की तरह गुस्से में बात नहीं करेंगे भाषा को सरल व प्यार व स्नेह वाली हो इसका प्रयास करेंगे।	प्यार व स्नेह से पेश आयेगे जिससे डर या किसी प्रकार का शर्म न करें।	मैं तीन साल तक बच्चों में गैप रखूंगा तथा सम्बंध बनाने में गर्भ निरोधकों का इस्तेमाल करूंगा।
	परिवार के स्तर पर	घर के सभी पुरुषों को कामों में हाथ बंटाने के लिए कहेंगे	समुदाय के साथ प्यार की भाषा इस्तेमाल करेंगे।		
पंकज	स्वयं के स्तर पर	खाना बनाते थे अब	पहले मैं धाक	बच्चों एवं महिला	बच्चों के गैप के

	पर	थोड़ी जीवनसाथी के साथ उचक पूचक करके बनायेगें।	चलाता था अब नहीं चलाउंगा। समूह को सकारात्मक मर्दानगी के बारे में बतायेगें।	के साथ कोमलता का व्यवहार करेगें। मर्दानगी के नुकसान के बारे में महिला को बतायेगें।	लिए स्वयं ही कण्डोम का इस्तेमाल करेगें।
कालिन्द्र सिंह	स्वयं के स्तर पर		जीवनसाथी के साथ उंची आवाज में बात नहीं करुंगा। समूह सदस्यों के साथ सकारात्मक मर्दानगी बतायेगें।	जीवनसाथी और बच्चों के स्वास्थ्य को लेकर चर्चा व जरूरत के लिए उपचार के लिए जाना।	जीवनसाथी के साथ चर्चा करेगें व जरूरत के हिसाब से कण्डोम का व्यवहार करेगें।
ओम प्रकाश साहू	स्वयं के स्तर पर	घरेलू कार्य में माँ, पत्नी और बहन के काम में सहयोग करुंगा।	मैं अपनी पत्नी के साथ आक्रामक रूप दिखाता था अब मैं पत्नी से नम्रता से बात एवं व्यवहार करुंगा। मैं कभी माँ और बहन को गाली गलौज करता था अब मैं बहुत ही कम कर दूंगा।	महिलाओं के साथ अभद्र बातें करता था अब नहीं करुंगा और महिलाओं को घर से बाहर जाने को छूट देना और निर्णय लेने देना।	बच्चों के जन्म के बाद ही कण्डोम इस्तेमाल करुंगा।
रवि उरांव	स्वयं के स्तर पर		पत्नी और बच्चे से प्रेमपूर्वक बात करना		गर्भनिरोधक का इस्तेमाल करेगें
रमई धान	स्वयं के स्तर पर	मैं अपने घर में पत्नी के बाहर के कामों में मदद करुंगा।	घर उंची आवाज में बात नहीं करुंगा व हिंसा नहीं करुंगा।	बच्चों को स्कूल पहुंचाउंगा।	गर्भनिरोधक का इस्तेमाल करुंगा।
अरुण धान	स्वयं के स्तर पर	घर में छोटे-छोटे कामों में हाथ बंटाना	भाई-बहन व माता-पिता के साथ मिलकर हंसी मजाक करना		
अमित कुमार सिंह	स्वयं व समुदाय स्तर पर	अब हर दिन घर में काम करने की कोशिश करुंगा। समुदाय व समूह सदस्यों को घर के काम के लिए प्रेरित करुंगा।	किसी बात से परेशान होकर घर में उंची आवाज में बात करता था पर अब नहीं करुंगा। रामनवमी में गांव के लोगों को बिना हथियार के जुलूस में जाने के लिए प्रेरित करुंगा।	माँ के साथ बैठकर थोड़ा समय व्यतीत करुंगा। गर्ल फ्रेंड से दिन में भी काल आने पर बात करुंगा।	दोस्तों के बीच जिनकी शादी हो गई है 3 साल का अंतर रखने की सलाह दूंगा। कंडोम के उपयोग के फायदे के बारे में चर्चा करुंगा।
हीरा लाल मोदी	स्वयं के स्तर पर	माँ और बहन के	अपनी भाषा में	बहनों को बाहर	जरूरत के हिसाब

	पर	साथ बैठकर बात करेंगे तथा चर्चा करेंगे। घर में काम करने की कोशिश करेंगे	विनम्रता लाने की कोशिश करेंगे व गुस्से की बजाय अच्छी तरह से बात करेंगे। गलती होने पर परिवार की महिलाओं से क्षमा मांगने की कोशिश करेंगे।	जाने की आजादी देंगे।	से सलाह देंगे।
लवकुश रजवार	स्वयं के स्तर पर	अपना पहना हुआ कपड़ा खुद साफ करेंगे व खाना बनाने में माँ और बहन की मदद करेंगे।	ऐसा हाँवभाव नहीं बनायेंगे जिससे लोग घमडी समझे ताकि लोग अपने बाते शेयर कर सकें।	बच्चों की देखभाल व बात इस तरह से करेंगे कि बच्चों से दोस्त बन जाय।	अपने तरीके से भाई व भाभी से बच्चों के गैप के बारे में बात करेंगे ताकि बच्चा स्वस्थ व तंदरुस्त हो।
रउफ आलम	स्वयं के स्तर पर	मैं पहले घरेलू कार्य नहीं करता था पर इस संस्था में काम करने के बाद बदलाव आया है।		घर के दूसरे बच्चों की देखभाल करेंगे।	
मन्तोष कुमार	स्वयं के स्तर पर	घर जाकर अपने लिए खाना बनायेंगे व साफ सफाई करेंगे।	घर में अपनी पत्नी से मधुर बोली बोलेंगे तथा बच्चों को डाँटें नहीं	बच्चों का पूरा ध्यान देंगे। पत्नी के साथ मिलकर अपनी भाषा पर बात करेंगे।	
देवेन्द्र नाथ हेम्रम	स्वयं के स्तर पर		हमेशा अपने छोटे से डाँट फटकार कर बात करते थे		
शेखर शरदेन्दु	स्वयं के स्तर पर	सुबह चाय बनाकर पिलायेंगे व सुबह-शाम झाड़ू लगायेंगे।	माँ, बेटी पिता, पुत्र, भाई व अन्य सदस्यों से कभी भी उंची आवाज में बात नहीं करेंगे।	महिलाओं एवं बच्चों के स्वास्थ्य व अन्य समस्याओं पर त्वरित पहल करेंगे।	घर में पत्नी, बेटी के साथ चर्चा करेंगे व बच्चों के शारीरिक बदलाव पर चर्चा करेंगे।
कमलेश कुमार जायसवाल	स्वयं के स्तर पर		किसी के साथ उंची आवाज में बात नहीं करेंगे। अब किसी के सामने फाईट या थप्पड का इस्तेमाल नहीं करेंगे।		परिवार नियोजन करा चुका।
बलदेव रजवाद	स्वयं के स्तर पर	अपने कपड़े साफ करेंगे। समय-समय पर बच्चों के कपड़े साफ करेंगे।	घर में पत्नी के साथ गाली-गलौज नहीं करेंगे।	बीमार पड़ने पर देखभाल करेंगे।	

Draft Training Session Plan- 4th Phase

Main Objectives –

- Increase understanding on masculinity and its impact on men and women and relationship.
- To understand the hegemonic masculinity and its relation with the violence, women with children.
- Participants will understand the way of reconstruct alternative masculinity.

Session	Description/Topics	Objectives	Method	Time
DAY- ONE				
1	Welcome, Introduction, Objective	Participants will able to know about each other	Individual	30 M
2	Expectation and Ground rules	To establish the expectations from participating in the Program To create the group commitment for the program.	Open discussion	30 M
3	Review of the 3 rd phase training contents	Participants will able to recall the subjects last training	Quiz	90 M
4	Sharing by the participants	Participants will share their changes, challenges & experiences	Story writing and sharing	90M
Men and Masculinity				
5	Construction of own masculinity	Participants will able to understand the concept & structure of masculinity	Free listing & sharing	60 M
7	Compulsion of maintaining patriarchal masculinity (performing the role, maintaining the image– as father, brother & husband, its impact on men	Participants will understand that why and how maintaining patriarchal masculinity and what impact have on men	Role Play & discussion	90 M
DAY- TWO				
8	Recap of first day	Finding out if there is any topic that needs clarifications	Sharing in pair	60 M
9	Factor effect construction of masculinity	Participants will able to understand the factor effect construction of masculinity and its reason	Group discussion	90 M
10	Hegemonic masculinity and Violence, and relation with violence	Participants will able to understand the hegemonic masculinity and relation with violence	Film screening & discussion	60 M
11	Men's reaction against aggression	Participants will able to understand the Men's reaction against aggression	Role Play & discussion	60 M
12	Risk taking and substantive abuse	Participant will able to understand the impact of violence to prove their own masculinity	Presentation & Open discussion	60 M
Reconstruction of Masculinity				
13	Gender role (House holed work, body language, changing voice culture)	Participants will able to understand their gender role to change hegemonic masculinity	Role Play & discussion	60 M
14	Relationship (Decision making, decries discrimination and violence, sexuality)	Participants will able to understand the positive way of masculinity for strengthen the relations	Group discussion & presentation	60 M
DAY- THREE				

15	Recap of second day	Finding out if there is any topic that needs clarifications	Individuals Sharing	60 M
16	Health (responsibility of spacing method, gap between marriage and conception)	Participants will be able to understand the region & impact of hegemonic masculinity on health to find out the way of changing masculinity	Discussion in Groups & presentation	60 M
17	Identity barriers in this roadmap (contextualize local scene) and Strategies to overcome these barriers	People will be able to identify the barriers of masculinity and find the strategies to overcome these barriers	Group discussion & presentation	120 M
19	Plan of action	Participants will make their plan of change	Individuals	90 M